यह चिंता मत करना कि मुझ गरीब के पास क्या है? मैं क्या चढ़ाऊं? भाव की दृष्टि से तुम सभी सम्राट हो। भाव की दृष्टि से भगवान ने सभी को समान बनाया है। वह काव्य भाव का सभी को बराबर दिया है। तुम्हारे पास धन न हो, फिकर मत करना; तुम्हारे पास पद न हो, फिकर मत करना; तुम अपने को तो चढ़ा ही सकते हो। तुम्हीं वास्तविक धन हो। तुम अपने भावों को तो चढ़ा ही सकते हो। फिर दो पत्ते भी पर्याप्त हैं।

दो नैन कमल

दो नैन कमल!
घूंघट में घनेरी रात लिए
आंचल में भरी बरसात लिए
कुछ पाए हुए, कुछ खोए भी,
कुछ जागे भी, कुछ सोए भी
चंचल ऊषा के बान लिए
गंभीर घटा का मान लिए
सावन के सजल संगीत भरे
कुछ हार भरे, कुछ जीत भरे
कुछ बीते दिनों की करवट-सी
कुछ आते दिनों की आहट-सी
किन गलियों दीप जलाए सखी!
ये भंवरे कित मंडलाए सखी!
सपनों से बोझल-बोझल
दो नैन कमल!

कुछ घबराए, कुछ शर्माए
कुछ शर्मा-शर्मा इतराए
सखी! भेदी भेद न पा जाए
कुछ उलझी-सुलझी आशाएं
कुछ बुझी-बुझी भाषाएं
कुछ बिखरे-बिखरे राग लिए
कुछ मीठी-मीठी आग लिए
अनुराग लिए, वैराग लिए
कुछ बीते दिनों की करवट-सी
कुछ आते दिनों की आहट-सी
किन गलियों दीप जलाए सखी!
ये भवंरे कित मंडलाए सखी!
नैनों से ओझल-ओझल
दो नैन कमल! दो नैन कमल!
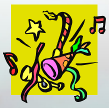
– ओशो
अथातो भक्ति जिज्ञासा-2, प्रवचन–27
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)